

कबीर के साहित्य में सामाजिक चेतना के स्तर और आयाम

मंजू कुमारी¹, डॉ. छाया श्रीवास्तव², डॉ. संजय कुमार सिंह³

¹ हिंदी विभाग, मध्यांचल प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भोपाल

² हिंदी विभाग, मध्यांचल प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भोपाल

³ हिंदी विभाग, पी के रॉय मेमोरियल कॉलेज, धनबाद

सार - व्यक्तिगत भावनाओं को किनारे रखते हुए। व्यापक सामाजिक संरचना मूल रूप से जातिआधारित नैतिक सिद्धांतों की - एक पदानुक्रमित व्यवस्था, विरासत में मिली समृद्धि को कायम रखने, साथ ही गर्व की खेती और सामाजिक स्थिति की समझ पर आधारित थी। इसके अलावा, आचरण की धारणा में पारंपरिक मान्यताओं और अंधविश्वासी धारणाओं पर आधारित परिवर्तन आया है। परिणामस्वरूप, मानव अस्तित्व का गहरा महत्व बाधित हो गया, केवल भ्रामक धारणाओं को गलती से सत्य के रूप में बरकरार रखा गया। सामूहिक जनता वर्णाश्रम, वेदशास्त्र-, तपस्या, तीर्थयात्रा, व्रतउपवास-, पूजा-पाठ, दान, पुण्य, माया, मोह और यौवन के जोश के मादक आकर्षण में फँसी हुई पाई गई। धार्मिक संबद्धता की आड़ में पाखंड और झूठ को बढ़ावा दिया गया। संतों की आध्यात्मिकता की पहचान सामाजिक चेतना के दायरे में पूर्ण स्वीकृति की स्थिति पैदा करती है। सामूहिकता के साथ व्यक्ति का संघर्ष उनकी सामाजिक चेतना से दूर रहता है। संत साहित्य के क्षेत्र में, समाज के भीतर एक पूर्णतः अलग पाया जाता है। थलग व्यक्तित्व की धारणा का स्पष्ट अभाव-

मुख्यशब्द- पारंपरिक, सामाजिक, नैतिक, भावनाओं।

-----X-----

प्रस्तावना

“कबीर शास्त्रीय गान की अपेक्षा अनुभव ज्ञान को अधिक महत्व देते थे। उनका विष्वास सत्संग में था। उन्होंने अद्वैत से इतना ग्रहण किया कि ब्रह्म एक हैं”, द्वितीय नहीं। जो कुछ दृश्यमान हैं। वह माया हैं, मिथ्या हैं। उन्होंने माया का मानवीकरण कर उसे कंचन और कामिनी का पर्याय माना और सूफीमत के शैतान की भाँति पथभ्रष्ट करने वाली समझा। उनका ईश्वर एक हैं जो निर्गुण और सगुण से भी परे हैं। वह निर्विकार और अरूप हैं। उसे मूर्ति और अवतार में सीमित करना ब्रह्म की सर्वव्यापकता का निषेध करना है। इस निराकार ब्रह्म की उपासना योग और भक्ति में की जा सकती हैं।

कबीर की इस देन को उनके परवर्ती प्रायः सभी संतो ने स्वीकार किया है। इसी कारण उन्हें बहुत से लोग आदि संत कहते हुए भी पाये जाते हैं। कबीर अपने आप में अनोखे, विरल और असाधारण होते हुए भी महापुरुषों की परम्परा में

जीवित हैं जिन्होंने अपने समय के प्रति भक्तिपूर्वक अपना उत्तरदायित्व निभाया है। कबीर के आविर्भाव के समय सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक क्रांतियाँ अपने चरम षिखर पर थी। राजनीति की परिस्थितियों में कोई स्थिरता नहीं थी न राजवंश स्थिर था न राजनीति निष्चित थी। आकस्मिक राज परिवर्तन की सम्भावना हमेषा बनी रहती थी। सरकार जनता पर मनमाना अत्याचार करती थी। ऐसी स्थिति में जनता की राजवंश या राजनीति में आस्था न रही। निरपेक्ष भाव से वह कहती थी कोउ नृप होय “ - हमें का हानी?”

एक ओर प्रजा ऐसी असहाय और दूसरी ओर कबीर का आविर्भाव, इस घटना को दैवीय संयोग ही कहना पड़ेगा। -

'भक्तमाल' टीका में, प्रियादास ने सिकंदर लोदी और कबीर के उल्लेखनीय ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के बीच हुए जटिल संघर्ष को कुशलता से स्पष्ट किया है। उपरोक्त टिप्पणी में, श्री सीताराम शरण भगवान प्रसाद ने सूक्ष्मता से देखा कि

इस घटना को देखने पर, मत्सरा या ईर्ष्या का पुनरुत्थान एक बार फिर ब्राह्मणों के दिलों में प्रकट हुआ। लोगों ने सामूहिक रूप से कबीर के युग की अस्थायी निकटता में काशी राज के बारे में ज्ञान प्राप्त किया, जिसके बाद वे राजा सिकंदर लोधी से मिले, जो आगरा से काशी तक गए थे। इतिहासकारों द्वारा किए गए विश्लेषण के अनुसार, विचाराधीन अस्थायी ढांचा वर्ष तक फैला हुआ है। 1517 से 89-1488 में 1494 वर्ष, अलेक्जेंडर ने काशी के शानदार शहर की यात्रा शुरू की। उपलब्ध साक्ष्य वर्ष तक कबीर के ई 499 अस्तित्व की पुष्टि करते हैं। उस समय, उन्होंने गुरु की सम्मानित पदवी हासिल कर ली थी और साथ ही हिंदू और मुस्लिम धर्मों के अनुयायियों के प्रति तीखी आलोचना शुरू कर दी थी।

“जसराणा गढ़ में लिखी सुमिर ले करतार।

राजा राणा छत्रपति सावधान किन होई।।

ऊपर दिए गए आंतरिक साक्ष्यों से पता चलता है कि कबीर ने अपने समय के शासकों की ओर सूक्ष्मता से संकेत किया है। राणा कुम्भा, जिन्होंने तक शासन ई 1468 से 1433 किया, और राणा संग्राम सिंह सांगा, जिन्होंने से 1508 तक राजगद्दी संभ ई 1527 वाली, भारतीय इतिहास में दो उल्लेखनीय व्यक्ति हैं। राणा कुम्भा, वास्तव में, मेवाड़ के प्रतिष्ठित क्षेत्र के प्रतिष्ठित शासकों में से एक हैं। शानदार विजेता मालवा और गुजरात के मुस्लिम सुल्तानों के खिलाफ कई मुठभेड़ों में विजयी हुआ, जिससे एक दुर्जेय शक्ति के रूप में उसकी प्रतिष्ठा मजबूत हुई। उनकी शानदार सफलता के प्रदर्शन में, चित्तौड़ के प्रतिष्ठित शहर में एक स्मारक विजय स्तंभ बनाया गया था, जो मालवा के सुल्तान की उनकी निर्णायक विजय के प्रमाण के रूप में काम कर रहा था। राणा सांगा ने अपने राज्यारोहण में, इस विशेष प्रभुत्व के दूसरे दुर्जेय और प्रभावशाली संप्रभु का पदभार ग्रहण किया। उपरोक्त व्यक्ति के शासनकाल के दौरान, यह देखा जा सकता है कि मेवाड़ राज्य ने अपने चरम का अनुभव किया। ऐतिहासिक वृत्तान्तों के अनुसार, ऐसा कहा जाता है कि वह दिल्ली और मालवा के सम्मानित सुल्तानों के खिलाफ कम से कम मुठभेड़ों में विजयी 18 हुए। उन्होंने युद्ध में असाधारण कौशल का प्रदर्शन किया उल्लेखनीय वीरता का प्रदर्शन करते हुए खुद को एक और उ अनुकरणीय योद्धा के रूप में प्रतिष्ठित किया।

ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार, प्रतिष्ठित कवि और दार्शनिक कबीर का जन्म जेष्ठ सुदी पूर्णिमा के शुभ दिन पर

हुआ था, जो विक्रमी कैलेंडर में वर्ष से मेल खाता है। 1455 लावाइसके अ, यह ध्यान देने योग्य है कि यह महत्वपूर्ण अवसर विशेष रूप से सोमवार को हुआ था। डॉमाता प्रसाद . .आर.गुप्त एस, मैं आपसे विनम्र अनुरोध करना चाहूंगा कि आप अपने कथन को इस तरह से दोबारा लिखें जो अधिक विद्वत्पूर्ण और प्रोफेशनल टोन का पालन करता हो। पिल्लई के का उपयोग करके गणितीय विश्लेषण "भारतीय कालक्रम" के माध्यम से, यह पता लगाया गया है कि वर्ष में 1455 जेष्ठ पूर्णिमा की घटना स्पष्ट रूप से सोमवार के दिन ही घटित होती है। इसके बाद के पद कबीर संप्रदाय में बहुत प्रसिद्ध हैं।

“चैदह सौ पचपन साल गए, चन्द्रवार एक ठाठ ठए।

जेठ सुदी बरसायत को पूर्णमासी प्रकट भए।

धन गरजै दामिनी दमके बरषै झर लाग गए।

लहर तालाब में कमल खिलै तंह कबीर भानु प्रगट भए।।“

उपरोक्त श्लोक के आधार पर, बाबू श्याम सुंदरदास ने इसके महत्व को समझाया, और वर्ष में उनके कथित 1456 एक मेहनती प्रयास जन्म को प्रमाणित करने के लिए किया गया है, जैसा कि दिए गए पीडीएफ में दर्ज है। माता प्रसाद द्वारा दिए गए दावे में कहा गया है कि वर्ष की जेष्ठ पूर्णिमा सोमवार के द 1456 िन के साथ मेल नहीं खाती है, जिससे उपरोक्त दावे में प्रामाणिकता की कमी का पता चलता है। कृपया अपना ध्यान केवल वर्ष के सितंबर महीने में होने वाली जेष्ठ सुदी पूर्णिमा 1455 पर केंद्रित करें। इसलिए, यह विधिवत स्वीकार करना अनिवार्य है कि कबीर का जन्म जेष्ठ स 1455ुदी पूर्णिमा की शुभ तिथि को माना जाना चाहिए, जो विशेष रूप से उसी दिन पड़ती है। सोमवार। पूज्य कबीर पुजारियों के सम्मानित शिष्य और उत्तराधिकारी धर्मदास बहुत चर्चा का विषय रहे हैं। यह एक स्वीकार्य कथन है, क्योंकि संबंधित व्यक्ति का अपने गुरु से सामना हुआ और परिणामस्वरूप, उनके जन्म की सही जानकारी प्राप्त नहीं हो पाई। यह खुलासा एक क्लास सेशन के दौरान हुआ।

इतिहास ग्रन्थ

कबीर का उल्लेख करने वाले इतिहास ग्रन्थ भी दो प्रकार के हैं - (1) प्राचीन (2) अर्वाचीन। प्राचीन इतिहास ग्रन्थों में 'आईन-ए-अकबरी' (संवत् 1655 अबुल-फजल अल्लायी कृत) और 'दबिस्तान-ए-मजाहिब' (संवत् 1700 के

आसपास, मोहसिन फानी कृत) उल्लेखनीय हैं। 'आइन-ए-अकबरी' में कबीर का उल्लेख 'जगन्नाथपुरी' और 'रतनपुरा' (अवध में स्थित) इन दो स्थानों के प्रसंग में किया गया है - जिससे निम्न लिखित सूचनाएँ मिलती हैं -

(1) कबीर सिकन्दर लोदी के समसामयिक थे। (2) वे एकेष्वरवादी थे। (3) उन्हें सत्य की झलक मिल गई थी। (4) उन्हें हिन्दू और मुसलमानों दोनों प्यार करते थे। (5) उनकी समाधि रतनपुर (अवध) और (पुरी) (जगन्नाथपुरी) दोनों स्थान पर बताई जाती हैं। (6) उनकी मृत्यु के बाद ब्राह्मण उन्हें जलाना चाहते थे और मुसलमान कब्रिस्तान में दफनाना चाहते थे। (7) वे समय की घिटी-पिटी रीतियों से अलग हो गये थे। (8) उनकी रहस्यमयी उक्तियाँ हिन्दी में प्राप्त हैं जो उनकी यादगार हैं।

सन्तों और भक्तों के स्फुट उल्लेख

कबीर का उल्लेख उनके समकालीन तथा परवर्ती अनेक सन्तों और भक्तों ने किया है इनमें धन्ना (संवत् 1472 जन्म), पीपा (संवत् 1582 जन्म) नानक (संवत् 1526-95), रैदास (कबीर के समकालीन), मीराबाई (संवत् 1561) कमाल (संवत् 1564), व्यास जी (ओड़छे वाले हरिराम शुक्ल, संवत् 1618), दादू संवत् 1601-60), बखना (सत्रहवीं सती का मध्य), तुकाराम (संवत् 1655 जन्म) आदि विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं। इन संतों और भक्तों के उद्गार श्रद्धापूर्ण हैं। इनके कबीर के सम्बन्ध में कुल तीन बातें ज्ञात होती हैं। (1) कबीर के गुरु रामानन्द थे, (2) कबीर जाति के जुलाहें थे। (3) कबीर भगवान के उच्चतम कोटि के भक्त थे। कबीर के जीवन से सम्बन्ध अन्य किसी धटना का उल्लेख इन संतों ने नहीं किया है।

सुझाव दिया गया है कि उनका निधन हो जाना चाहिए। एफ. श्यामसुंदर दास ने कबीर ग्रंथावली के प्रस्ताव के भीतर इस विशेष पहलू पर अपनी आपत्ति व्यक्त करते हुए कहा कि इसमें ठोस प्रमाण माने जाने के लिए अपेक्षित स्तर का औचित्य नहीं है। डॉ. रामकुमार वर्मा के कथन के अनुसार यह माना जा सकता है कि बिजली खां ने उनकी समाधि का स्थान नहीं बदला। बल्कि, आदरणीय युवा कबीर की श्रद्धा को समर्पित स्मारक स्थल 27 साल बाद तक बरकरार रहा, जब तक कि फिदाई खान ने उनकी समाधि की स्थिति ग्रहण नहीं कर ली। वर्ष 1448 में कबीर का सिकंदर लोदी से कोई पारिवारिक संबंध नहीं था। 1488 से 1517 ई. तक का काल राणा कुम्भा के वैभव का काल नहीं माना जाता।

राणासंग्राम सिंह के साथ उनके संबंधों की जांच अभी भी दूर है।

“भुजा बांधि मिलाकर डारिओ। हसती कोपी मुंड महि मारिया।।

कंचरू पोट ले नमसकोर। बुड़ी नहीं कासी अंधियारे।।

गंग गुसाइन गहरि गंभीर जंजीर बाँधि करि खरे कबीर।।

वर्ष 1448 में सिकंदर लोदी की मृत्यु के बाद, ऐसा हुआ कि सिकंदर लोदी और कबीर की दोनों बहनें, जो एक दूसरे की समकालीन थीं, निर्वासन की अवधि पर जाने के लिए मजबूर हो गईं। उपर्युक्त समसामयिक इतिहास ने काफी प्रसिद्धि प्राप्त की है, और इतिहासकारों के बीच यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि केंद्र लोदी वास्तव में कबीर के खिलाफ विद्रोह में शामिल थे। अवशिष्ट तेरह से संबंधित प्रवचन में, धारणा संख्या तीन की जांच करने पर, यह पता चलता है कि प्रश्न में विषय का निधन वर्ष 1566 में हुआ था, विशेष रूप से वर्ष 1512 में। इसके अलावा, धारणा संख्या चार के प्रकाश में, यह स्पष्ट हो जाता है वर्ष 1549 से पहले, समाप्ति की सटीक तारीख की पुष्टि नहीं की जा सकी, यहाँ तक कि सुनिश्चित भी नहीं की गई। पोस्ट नंबर अनंतदास की शुरुआत वर्ष 1518 में हुई, जो दो मूलभूत सिद्धांतों की नींव पर आधारित थी।

‘जुलहा गेहें उत्पन्नयों साध कबीर।

कबीर ग्रंथावली नामक प्रतिष्ठित कृति में, विद्वान विद्वान डॉ. श्यामसुंदरदास ने इस धारणा को प्रतिपादित किया है कि कबीर, जो हमारे प्रवचन का विषय है, की उत्पत्ति एक विधवा ब्राह्मण की संतान के रूप में की जा सकती है। इस धारणा का आधार कबीर-पंथियों के अनुयायियों के बीच प्रचलित किंवदंतियों में मिलता है। हालाँकि, यह उल्लेख करना उल्लेखनीय है कि डॉ. श्यामसुंदरदास एक वैकल्पिक परिकल्पना भी प्रस्तुत करते हैं, जिसमें बताया गया है कि कबीर का पालन-पोषण एक मुस्लिम जुलाहे के घर में हुआ था। डॉ. बड़थवाल, मैं आपसे एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा करना चाहता हूँ। श्यामसुंदर दास द्वारा व्यक्त दृष्टिकोण के सीधे विरोध में, यह माना जाता है कि कबीर की वंशावली का पता जुलाहा वंश से लगाया जा सकता है।

पारिवारिक जीवन परिचय

कबीर के परिवार की व्यापक प्रकृति उनके द्वारा प्रस्तुत आंतरिक साक्ष्यों से प्रमाणित होती है। प्रश्नाधीन व्यक्ति इतना भाग्यशाली था कि उसे कल्त्रा और दुहिता नामक प्रतिष्ठित पूर्वजों की उपस्थिति प्राप्त हुई। प्रस्तुत आंतरिक साक्ष्यों की सावधानीपूर्वक जांच करने पर, यह दावा करना प्रशंसनीय है कि पाठ की इच्छित व्याख्या कबीर के सम्मानित पूर्ववर्तियों के अस्तित्व का सुझाव देती है। इसके अलावा, उस काल्पनिक परिदृश्य में जहां छोटे भाईबहन मौजूद हैं, यह स्वीकार करना जरूरी है कि यह परिस्थिति कोई संकट पैदा नहीं करती है। यह प्रशंसनीय है कि इन व्यक्तियों का कबीर के साथ सीधा भाईचारा वाला रिश्ता नहीं हो सकता है, बल्कि वे संभावित रूप से उनके चाचा या मामा की संतान हो सकते हैं, जिससे वे कबीर के निवास स्थान के अलावा अलगअलग निवासों में रहते हैं। कबीर के दिखावटी - आचरण, अंतर्निहित स्वभाव और सत्संग के प्रति अदृष्ट प्रतिबद्धता के कारण किसी के मन में उनके प्रति नाराजगी की भावना हो सकती है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. कबीर के साहित्य में सामाजिक चेतना के स्तर और आयामों का अध्ययन करना
2. भक्तों और भक्तों के उल्लेख और पारिवारिक जीवनियों का अध्ययन करना

अनुसंधान क्रियाविधि

हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिकता के खिलाफ आवाज उठाने वाले पहले सन्त, विचारक और कवि कबीर ही हैं। रूढ़ धार्मिक शास्त्रों, पूजा उपासना सम्बन्धी जड़ताओं, मन्दिर-मस्जिद विषयक अंध आस्थाओं, जाति वर्ग सम्बन्धी फर्जी और तमाम तरह के भारतीय जीवन के अन्तर्विरोध को उन्होंने निर्ममता के साथ अस्वीकार कर दिया था। वे केवल अस्वीकार नहीं कर रहे थे, स्थापित भी कर रहे थे। मतलब यह कि वे अपने आस-पास की दुनिया की ओर से आँख बन्द करने वाले, नश्वरता की नियति से घबरा जाने वाले तटस्थ व्यक्ति नहीं थे। विरक्ति की महता को जानते और स्वीकारते हुए, सन्तों के लिए धर्म-कर्ममय जगत की रचना कर रहे थे।

कबीर के काव्य रूपों में समाज

उल्लेखनीय उपलब्धि वाले व्यक्ति, कबीर साहेब ने आध्यात्मिक अन्वेषण के क्षेत्र में कौशल का प्रदर्शन किया,

एक प्रेरक वक्ता के रूप में पर्याप्त प्रभाव डाला, असाधारण नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन किया और एक दूरदर्शी मानसिकता रखते थे जिसने मौजूदा प्रतिमानों को चुनौती दी। उनकी संपूर्ण काव्य रचनाएँ अपनी बौद्धिक गहराई और मानवीय भावनात्मक कोर की गहराई से उत्पन्न उत्कट इच्छाओं में भव्यता की आभा का संचार करती हैं। प्रश्न में शामिल व्यक्ति ने सरल छंदों, विभिन्न शैलीगत तकनीकों और काव्यात्मक संरचनाओं के उपयोग के माध्यम से अपने संज्ञानात्मक विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त किया है।

संतमत का स्वरूप बताने वाली साखियाँ

कबीर साहेब ने कई साखियों में साधु-संतों के बारे में लिखा है। इन मजदूरों और किसानों में एक व्यापारिक वर्ग भी था। सभ्यता में सुव्यवस्थित बाजार थे। अतीत में बेईमानी आम बात थी। लोगों के इस प्रकार के कार्यों से कबीर को घृणा थी। भगवान को और अन्य लोगों को धोखा देकर उनके भरोसे को धोखा देना गलत है। मानवता पर अत्याचार किया जाता है और उसके साथ गलत व्यवहार किया जाता है। ऐसे कार्यों से कबीर साहेब को दुःख हुआ। मूर्खतापूर्ण और पुरातनपंथी मान्यताओं पर चर्चा करते समय कबीर उन्हें सामने लाते हैं।

डेटा विश्लेषण

सत्य के प्रति निष्ठा होने पर झूठ का मोह दूर होकर जीवन सदाचार से पूर्ण होगा और मन सद्भावना से भवित होगा। कबीर साहेब की प्रसिद्धि का कारण यही है कि उन्होंने जीवनपर्यन्त सत्य को जिया और सारे आडंबर, अंधविश्वास तथा भेदभाव से ऊपर उठकर सत्य का संदेश दिया। जिसका जीवन सदाचार से तथा मन सत्यनिष्ठा से पूर्ण होगा वह भीतर - बाहर एक समान ठोस तथा आत्मविश्वास का धनी होगा। वह पूर्ण निर्भय भी होगा। इसी सत्यनिष्ठा एवं आत्मविश्वास से पूर्ण होने के कारण ही वे 119 वर्ष की जरजर अवस्था में काशी छोड़कर मगहर गये। उनके काशी से मगहर जाने के पीछे एक ही उद्देश्य था असत्य का खण्डन कर सत्य का मण्डन, सत्य की प्रतिष्ठा करना। दिन जितने बीतते जा रहे हैं उतने ही कबीर और चमकते चले जा रहे हैं। अभी उनकी चमक और बढ़ेगी, उनके आभामण्डल का और विकास होगा।

"बोली हमारी पूरब की हमें लखें नहीं कोय ।

हमको तो सोई सखै, धुर पूरब की होय ॥ "

इस दोहे के अर्थ को लेकर भी विद्वानों में काफी अन्तर है इसके अलग-अलग अर्थ लगाये जाते हैं।

क्षमा और शील

जब किसी व्यक्ति के भीतर क्षमा और विनम्रता प्रकट होती है, तो यह उनके द्वेषपूर्ण दृष्टिकोण की समाप्ति का प्रतीक है। अब से, यह स्वीकार करना अनिवार्य है कि विनय, जिसे आमतौर पर सर्वोपरि रत्न कहा जाता है, सभी रत्नों के सर्वोत्कृष्ट भंडार के रूप में कार्य करता है।

प्रेम, मौखिक अभिव्यक्ति में सत्यता के साथ, मौजूद होना चाहिए। स्नेहपूर्ण प्रवचन का उपयोग एक शक्तिशाली चिकित्सीय एजेंट के रूप में कार्य करता है, जबकि तीखी भाषा का उपयोग तीर के समान एक भेदी प्रभाव डालता है। जो कोई भी मौखिक भाषा के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करने की क्षमता रखता है, उसके प्रवचन का मूल्य अथाह है। हालाँकि, मौखिक संचार में संलग्न होने के लिए, विषय वस्तु के भावनात्मक महत्व का मूल्यांकन करके उसके परिमाण या महत्वहीनता का सावधानीपूर्वक आकलन करना अनिवार्य है।

परमलक्ष्य एवं साधना

उपरोक्त सद्वृत्तों की खेती, अभिमान और दुःख जैसे दोषों के त्याग के साथ मिलकर, मानव मानस को शुद्ध और परिष्कृत करने का कार्य करती है। घटनाओं के इस क्रम के बाद, भौतिक और संज्ञानात्मक क्षमताओं के बीच एक सामंजस्यपूर्ण समन्वय स्थापित करना अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि इन दोनों संस्थाओं के बीच अंतर्निहित संघर्ष मानव जाति को उसके वांछित उद्देश्य की प्राप्ति के पथ से विचलित कर देता है। मानव संविधान के भीतर उत्पन्न होने वाला गहरा मतभेद, अर्थात् धारणा और अनुभूति की क्षमताओं के बीच संघर्ष, अत्यंत गंभीरता और महत्व का विषय है। उपर्युक्त चुनौती को केवल शारीरिक और संज्ञानात्मक क्षमताओं के सामंजस्यपूर्ण समन्वय के माध्यम से पार किया जा सकता है। इस विवाद के समाधान के बाद, व्यवहार्य पद्धतियों के रूप में गुणातीत और सहज समाधि पर चिंतन करने की सलाह दी जाती है। यदि कोई इतना भाग्यशाली है कि उसे गुरु की कृपा प्राप्त होती है, तो उपरोक्त सभी कारकों के अलावा, अलख का अलौकिक क्षेत्र बोधगम्य

हो जाता है, जिससे सर्वोच्च सत्ता की प्राप्ति आसान हो जाती है।

कबीर की लोक (अर्थात् वृत्त समाज) सम्पृति:-

गोस्वामी तुलसीदास ने स्पष्टतः कहा है कि:

कीरति भनिति भूति भलि सोई ।

सुरसरि सम सब कहूँ हित होई ॥

"गंगाजी की तरह, प्रसिद्धि, कविता और धन तभी सर्वोत्तम होते हैं जब वे सभी को लाभान्वित करते हैं। "सब कहूँ" अकेले ही सार्वजनिक कल्याण की भावना व्यक्त करता है। यही कारण है कि भक्ति युग को हिंदी साहित्य का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है। लोगों की खुशी और खुशहाली ही इसके हर कवि के पीछे की प्रेरणा शक्ति है। वह भव्य व्यक्ति, जो शांत जमुना नदी की तरह, विशाल लोक से आकार लेता है, लोक की छवि और प्रतीक दोनों है, और विशाल लोक की अविभाज्य संतान है।

यह सत्य है कि संत कबीर ने पूर्ण आत्म-आश्वासन दिया; उनके शब्द और कार्य एक दूसरे के साथ पूर्ण सामंजस्य में थे। था। निश्चित रूप से एक आक्रामक व्यक्ति, उसके हमलों से बाह्यवाद के प्रति प्रतिरोध और सार्वजनिक जागरूकता में बाधा डालने के तरीकों के खिलाफ गहरी दुश्मनी का पता चला। लंबे समय से चली आ रही मान्यताओं के अनुसार एक लोक विचारक की शक्ति और साहस हिमालय और शेर के समान है। वह लड़ाई से पीछे नहीं हटता और अपने दुश्मनों को डराने की बजाय अच्छे कामों से पलटवार करता रहता है। इस बिंदु पर, गोस्वामी तुलसीदास के निम्नलिखित शब्द मेरे दिमाग में कौंधते हैं:

साधु चरित सुभ चरित कपासू, निरस बिसद गुनमय फल
जासू ।

जो सहि दुख परछिद्र दुरावा, बंदनीय जेहि जग जस पावा
॥

आत्म-आश्वासन और सदाचार की उच्च भावना रखने वाले व्यक्तियों में लिखित शब्द के माध्यम से बताई गई सत्यता को अपनाने के प्रति कम झुकाव प्रदर्शित होता है। इसके बजाय, वे व्यक्तिगत अवलोकन और प्रत्यक्ष अनुभव से प्राप्त प्रामाणिकता पर अधिक जोर देते हैं।

मेरा तेरा मनुआ कैसे इक होइ रे।

में कहता हूँ आँखिन देखो, तू कहता कागद की लेखी ।

में कहता सुरझावन हारी, तू राख्यो अरुझाइ रे । ।

वास्तव में, भक्ति काल के संरक्षक संत कबीर की कड़ी निगरानी में, उज्ज्वल 'अलोक' के निवासियों ने जातिवाद, वर्णाश्रम व्यवस्था आदि जैसे बुरे संप्रदायों के चंगुल से भागने के लिए अपनी शक्ति में सब कुछ किया। उदाहरण के लिए, "कबीर ऐसे थे," आचार्य प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं। सर से पाँव तक मस्त मौलावह स्वभाव और आदत से घमंडी है फिर भी भक्तों के प्रति भोला है और भेषधारी के प्रति हिंसक है।

सात्विकता

ध्यान: व्यक्तियों का अस्तित्व नैतिक उत्कृष्टता, सामंजस्य की स्थिति की विशेषता है, जिसमें व्यक्ति सामूहिक रूप से पथ पर चलते हैं और अपने साथी प्राणियों के सुख और दुख में भाग लेते हैं, इस प्रकार जनता की अत्यधिक भक्ति का प्रतीक होते हैं। इसके विपरीत, विषाक्त नागरिकों द्वारा प्रदर्शित रवैये को आत्म-केंद्रित और दोष या कमजोरियों को खोजने की इच्छा से प्रेरित माना जा सकता है। वह सामाजिक मेलजोल में शामिल होने से आनंद प्राप्त करता है और, साँप के व्यवहार के समान, वह दूसरों का दृढ़तापूर्वक सामना करने या चुनौती देने की तत्परता प्रदर्शित करता है। 'अज्ञेय' के नाम से जाने जाने वाले सम्मानित कवि द्वारा रचित सर्प से संबंधित रूपक रचना, एक गहन मार्मिकता प्रदर्शित करती है जो शहरी परिदृश्य के भीतर प्रचलित गहन सामाजिक-आर्थिक असमानताओं के एक स्पष्ट प्रतिबिंब के रूप में कार्य करती है।

साँप तुम सभ्य तो हुए नहीं, न होगे।

नगर में बसना भी तुम्हे नहीं आया।

एक बात पूछ उतर दोगे ।

फिर कैसे सीखा डसना, विष कहा पाया।

सुर्खियों में आने वाले कबीर कभी भी आम आदमी की नज़रों से ओझल नहीं हुए। जब भी वह किसी किसान, मोची, नाविक, धोबी आदि को तुच्छ दृष्टि से देखता, तो

उसका दिमाग चकरा जाता। व्यक्ति अक्सर सोचते हैं कि व्यक्तियों के साथ अलग-अलग व्यवहार करना मूर्खता है - क्योंकि वे सभी मूल रूप से एक जैसे हैं। एक जीवंत समुदाय के रूप में, हिंदू मुस्लिम दुनिया का एक अभिन्न अंग हैं। जब आप लोगों को काल्पनिक समूहों में वर्गीकृत करने का प्रयास करते हैं तो अज्ञानता की जीत होती है।

अलंकार योजना

अपने मूल व्यवसाय में कबीर की पहचान एक कवि के रूप में नहीं, बल्कि एक संत और भक्त के रूप में थी। उनके प्रयासों का प्राथमिक उद्देश्य काव्यात्मक कृतियों का निर्माण नहीं था, बल्कि समाज को सत्यता के मार्ग पर मार्गदर्शन करने और सामाजिक मुद्दों को बोधगम्य बनाने का नेक प्रयास था। संबंधित व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत आख्यान राम रस के दायरे में अनुभव किए गए आनंद और खुशी के सार को समाहित करते हैं। वास्तव में, सत्यता इस दावे में निहित है कि उन्होंने कविता को अपने उपदेशों के माध्यम के रूप में नियोजित किया, यद्यपि उन्होंने काव्य रचना के कार्य में संलग्न होने का प्रयास नहीं किया। अभिप्राय यह है कि विचाराधीन सामग्री कलात्मक अभिव्यक्ति की अभिव्यक्ति के बजाय भावनाओं के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य करती है। कलात्मक प्रदर्शन की खोज उनके दायरे में नहीं थी, न ही उन्होंने इसे साकार करने के लिए कोई प्रयास किया। बल्कि, उनका प्राथमिक उद्देश्य उनकी भावनात्मक भावनाओं को आम जनता तक पहुंचाना था, एक ऐसा लक्ष्य जिसे वह सक्रिय रूप से पूरा करने में अफसोस के साथ विफल रहे। उनकी साहित्यिक कृतियों में अलंकारों का उपयोग कोई सचेतन प्रयास नहीं है, बल्कि एक सहज और सहज अभिव्यक्ति है।

कबीर की काव्य भाषा में लोकोक्तियाँ

कबीर की भाषा में कहावतों के प्रयोग से जुड़ी विभिन्न घटनाओं का व्यापक चित्रण मिलता है। नीतिवचन, मेरे प्रिय वार्ताकार, वास्तव में अलंकार का एक उल्लेखनीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। काव्य के क्षेत्र में प्रसिद्ध लोक कहावतों के प्रयोग को आमतौर पर लोककथा अलंकरण कहा जाता है। कबीर ने भी कहावतों को अलंकार के रूप में प्रयुक्त किया है। इसके अलावा, अपने दावे को मान्य करना और विषय वस्तु के महत्व को रेखांकित करना अनिवार्य है। लेखक द्वारा संक्षिप्त कथनों का कुशल उपयोग वास्तव में उल्लेखनीय है, क्योंकि यह पाठक का ध्यान आकर्षित करता है। इसके अलावा, लेखक की परिष्कृत

भाषा और कूटनीति की कुशल तैनाती पाठक को गहरी भावनाओं से भर देती है, साथ ही उपयोगकर्ता की अभिव्यक्ति को चतुराई और प्रेरणा के स्तर तक बढ़ा देती है।

शब्द भण्डार

कबीर की भाषाई कुशलता और योग्यता उनकी व्यापक शब्दावली में स्पष्ट है। प्रश्न में शामिल व्यक्ति ने मानव अस्तित्व के विभिन्न पहलुओं को शामिल करने वाले विभिन्न प्रकार के डोमेन से उत्पन्न शब्दावली को शामिल करने का एक जानबूझकर विकल्प बनाया है। पंजाबी और गुजराती जैसी भारतीय भाषाओं के साथसाथ अरबी और - साथ ब्रज-फारसी जैसी विदेशी भाषाओं के साथ, अवधी, खड़ी बोली, राजस्थानी और भोजपुरी जैसी प्रचलित भाषाई किस्मों के लोकप्रिय शब्दों को शामिल करने के पीछे का तर्क इस क्षेत्र में आसानी से समझा जा सकता है। उनकी काव्य रचनाओं का कबीर के भाषाई ढांचे से संबंधित दिए गए संदर्भ में, प्रयुक्त विशिष्ट बोली, चाहे वह अवधी हो, 'खड़ी बोली' या 'भोजपुरी' की व्यापकता वाली 'ब्रजजी' हो, कोई महत्वपूर्ण प्रासंगिकता नहीं रखती है। इसके दिए गए संदर्भ में जो बात महत्व रखती है वह उस विशेष युग के दौरान प्रचलित सांस्कृतिक और सामाजिक उथलपुथल की भाषाई - अभिव्यक्ति है।

रस परिपाक

कबीर के काव्य में रसात्मकता भी विद्यमान है। यदि इस प्रयोग की दृष्टि से उनके काव्य का मूल्यांकन करें तो उनकी साखियों, पदों और रमैणियों में श्रृंगार, शान्त भक्ति और वीर रस को खोजा जा सकता है। श्रृंगार के अन्तर्गत संयोग और वियोग दोनों को महत्व प्राप्त हुआ है। शांत रस पर्याप्त स्थलों पर देखने को मिल जाता है और भक्ति रस तो कबीर के काव्य में आद्यन्त व्याप्त है। जहाँ तक वीर रस का प्रश्न है, कबीर ने कहीं भी युद्धवीर का वर्णन नहीं किया है तथापि साधना के क्षेत्र में वीरताप्रदर्शन के अनेक उदाहरण उनकी - शीर्षक के 'सूरतन कौ अंग' वाणियों में विद्यमान हैं। अन्तर्गत कबीर की साखियां साधक की वीरता, उद्देष्ट्य प्राप्ति की ललक और उत्साह भावना से परिपूर्ण हैं।

प्रतीक विधान

प्रायः साधारण मनुष्य अपने भावों की व्यंजना अपने जाने - पहचाने शब्दों द्वारा ही किया करता है, किन्तु कभीकभी - पहचाने शब्द अपने -कथन की भंगिमा के कारण उसके जाने रुढ़ अर्थ को छोड़कर कोई नया अर्थ ग्रहण कर लेते हैं।

किन्तु समग्र समाज इन पुराने शब्दों का यह नया अर्थ समझने में असमर्थ होता है। यह कथन इस प्रकार से होता है कि उन शब्दों की हो जाती है। 'प्रत्यक्ष गति बाधित' अप्रत्यक्ष गति उनके प्रयोग में आ जाती है। इस) अर्थात् प्रकार ये शब्द विलक्षण हो जाते हैं। कभीकभी लाक्षणिकता - के कारण भी प्रतीक बनते हैं।

गेयता

साहित्य में संगीत की संस्थिति विवाद रहित है। काव्य की छन्दोबद्धता को सँवा से पृथक करना काव्य के साथ अन्याय होगा। वर्तमान युग में हम मुक्त छंद की चर्चा करते हैं, लेकिन लय को स्वीकारते हैं। इस 'लय' तत्व में ही संगीत छिपा है। कविता में संगीत तत्व से हमारा अभिप्राय रमणीय अर्थ के साथ स्वर की मधुरता समरता लयात्मकता के संघात से ही है। संगीत के तत्व नाद, छंद और लय ये तीन उपजीव्य तत्व हैं। काव्य कला का आधार भाषा है और यह 'नाद' का ही विकसित रूप है।

'नाद' तत्व को 'षब्दाकारित' करने में शब्दालंकारों का विशेष योगदान है। वास्तव में शब्द विधान कौषल 'लय' माधुर्य करने आदि से ही 'गीत' सुदृढ स्निग्ध, चमकीले, रेषमी तारों से निर्मित, 'सिल्क' सा उतरता है। अर्थ के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद हो सकता है, किन्तु छन्द (नादलय) के प्रभाव को अस्वीकार करना सबके लिए कठिन है। अतः छन्द काव्य में समरसता, एकता, सौन्दर्य आदि के प्रभाव को प्रादुर्भूत करने वाला है। छन्द का लय से गहरा सम्बन्ध होता है। आचार्य शुक्ल कहते हैं "छन्द वास्तव में बंधी हुई लय के भिन्न - भिन्न ढाँचों का योग है जो निर्दिष्ट लम्बाई का होता है। वास्तव में छन्द सुविन्यस्त लयों का संसार है। छंद जहाँ देखा और परखा जा सकता है वहाँ लय केवल अनुभूति की वस्तु है। लय चेतना सम्पन्न काव्य शरीर है, छन्द उसका निर्जीव ढाँचा, छन्द का प्राण लय ही है। लय केवल बाह्य वस्तु नहीं है, वह हमारी आत्मा की संगीतात्मक अभिव्यक्ति है।

उपसंहार

वर्तमान भारत को साम्राज्यवादी शक्तियों, नव धनाढ्यों, पूंजीपतियों, प्रशासकों और राजनेताओं सहित विभिन्न प्रभावशाली संस्थाओं के बीच एक नाजुक संतुलन से जूझ रहे राष्ट्र के रूप में जाना जा सकता है। कालाबाजारी की घटना, जिसमें कालाबाजारी, मिलावट और भ्रष्टाचार जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं, न केवल अर्थशास्त्र के दायरे में प्रकट होती हैं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक और

धार्मिक क्षेत्रों में भी व्याप्त हैं। कबीर, एक प्रमुख व्यक्ति, ने लगन से कुशल बुनकरों की एक वंशावली को बढ़ावा दिया, जिन्होंने अफसोस के साथ खुद को हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों के अनुयायियों द्वारा उपेक्षित और उपेक्षित पाया। हाशिये पर पड़े इन कारीगरों को दोनों समुदायों के हाथों भारी पीड़ा सहनी पड़ी, फिर भी कबीर, व्यक्तिगत ज्ञान और मुक्ति की प्रबल खोज से प्रेरित होकर, अपने प्रयासों में लगे रहे। आत्मज्ञान के पथ पर आगे बढ़ने के बाद, वह सद्गुण और वाक्पटुता के प्रतिमान के रूप में उभरे, उन्होंने साहसपूर्वक एक लोक ग्रंथ तैयार करने का प्रयास किया, जिससे प्रचलित धार्मिक और पारंपरिक सम्मेलनों के सामने एक उपन्यास वैचारिक प्रक्षेप पथ का निर्माण हुआ। विचाराधीन व्यक्ति ने अपने प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व के रूप में 'राम' का जानबूझकर चयन किया है, जिससे मध्यकालीन युग की हाशिए पर और पीड़ित आबादी को प्रेम के गहन अनुभव के माध्यम से मुक्ति का मार्ग प्रदान किया गया है। समकालीन समय में, मौजूदा परिस्थितियों के बावजूद, ये व्यक्ति राजनेताओं, अधिकारियों, आचार्यों और गुरुओं के वर्तमान कैडर के लिए एक कठिन चुनौती पेश करते दिखाई देते हैं। विचाराधीन व्यक्ति ने अनंत काल की अवधारणा के लिए एक वकील की भूमिका निभाई है, एक ऐसी स्थिति जो महत्वपूर्ण महत्व रखती है क्योंकि यह श्रम और उपभोग द्वारा संचालित समाज की तुच्छ और महत्वहीन चिंताओं को परेशान करती है। इस व्यक्ति का संदेश अत्यंत स्पष्टता के साथ व्यक्त किया गया है, क्योंकि वे दावा करते हैं, "हम अस्तित्व की भव्य योजना में केवल मोहरे हैं।" उपर्युक्त कथन और क्रिया और वाणी के बीच अंतर की व्याख्या प्रभावी ढंग से क्रिया और क्रिया के बीच असमानता को रेखांकित करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कबीर वाजी संग्रह - सम्पा० डॉ० पारसनाथ तिवारी डॉ० समुद्रज्ञा कामत पृ० 13
2. कबीर ग्रथावली - भूमिका - पृ० 3 डॉ० मात प्रसाद गुप्त
3. कबीर ग्रथावली सम्पा० आचार्य श्याम सुन्दर दास पदरू 33 पृ० 77
4. संत कबीर सम्पा० डॉ० राम कुमार वर्मा पद- 37 पृ 39
5. कबीर ग्र० पारसनाथ तिवारी पद 182 पृ० सं० 106

6. बीजक ग्र० टीकाकार हनुमान दास जी पृ० 385
7. कबीर साहित्य की परख परशुराम चतुर्वेदी पृ० 205
8. डॉ० रघुवंश रामस्वरूप चतुर्वेदी धीरेन्द्र वर्मा - हिन्दी साहित्य कोश भाग - 1, 2
9. डॉ० रामचन्द्र वर्मा - मानक हिन्दी कोश
10. शिप्ले जे० टी० - डिक्शनरी आफ वर्ल्ड लिटरेचर
11. कबीर : जीवन और दर्शन, उर्वशी सूरती, लोक भारती प्रकाशन 15 ए महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, संस्करण 1980
12. कबीर ग्रन्थावली : डा० पारसनाथ तिवारी, हिन्दी परिषद प्रयाग विश्व विद्यालय, प्रयाग सन् 1961 ई०
13. कबीर ग्रन्थावली सं० डा० माता प्रसाद गुप्त, प्रमाणिक प्रकाशन, आगरा, 1969 ई
14. कबीर वचनावली : अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं० 2013 वि०
15. कबीर मीमांसा : डॉ० रामचन्द्र तिवारी, लोक भारती प्रकाशन १३ महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, सन् 1978 ई०
16. भक्ति आन्दोलन और साहित्य : डॉ० एम जार्ज, सं० 1978 प्रगति प्रकाशन, बैतुल बिल्डिंग, आगरा
17. युग पुरुष कबीर : डॉ० रामलाल वर्मा, डॉ० रामचन्द्र वर्मा भारतीय ग्रन्थ निकेतन 133, लाजपत राय मार्केट, दिल्ली- 110006

Corresponding Author

मंजू कुमारी *

हिंदी विभाग, मध्यांचल प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भोपाल